शैक्षिक सत्र–2026–27

संगीत (गायन)

कक्षा–12

खण्ड–क (संगीत विज्ञान) **पूर्णांक : 100**

तीन घण्टे का एक प्रश्नपत्र 50 अंको का होगा। 50 अंक की प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी। लिखित में 17 तथा प्रयोगात्मक परीक्षा में 16 अर्थात दोनों का कुल योग 33 अंक प्राप्त करना आवश्यक होगा। प्रश्नपत्र दो खण्डों में विभाजित होगा। खण्ड 'क' 25 अंकों तथा खण्ड 'ख' भी 25 अंकों का होगा।

खण्ड–क (संगीत विज्ञान) **25 अंक**

इकाई–1– श्रुतियां, वीणा के 36 तार पर शुद्ध स्वरों का स्थान। **05 अंक**

इकाई–2– **05 अंक**

- पूर्व राग, उत्तर राग, सन्धि प्रकाश राग, आश्रय राग, परमेल, प्रवेशक राग।
- उत्तर और दक्षिण भारत के थाटों का वर्गीकरण और उससे रागों की उत्पत्ति।

इकाई–3– **05 अंक**

- अंश, न्यास, अल्पत्ष, बहुत्व।
- तान एवं तान के प्रकार।

इकाई–4–हिन्दुस्तानी और कर्नाटक पद्धतियों के स्वरों एवं श्रुतियों का तुलनात्मक अध्ययन। **05 अंक**

इकाई–5–सचित्र तानपुरे के विभिन्न अंगों का ज्ञान, उसकी मिलान विधि तथा उसके अधिस्वर। **05 अंक**

खण्ड–ख **25 अंक**

(संगीत का इतिहास एवं रागों का अध्ययन)

इकाई–6– गायन (गीत) की शैलियों का वर्णन एवं उसके प्रकार– **05 अंक**

- ध्रुपद, धमार, टप्पा, ठुमरी, ख्याल (विलम्बित एवं द्रुत), तराना।
- ग्वालियर घराने की विशेषता।
- पाठ्यक्रम में प्रस्तावित तालों का ठेका, दुगुन, तिगुन, चौगुन का ज्ञान– तीनताल, एकताल, चारताल, धमार ताल।

इकाई–7– **05 अंक**

- प्रयोगात्मक परीक्षा के लिए प्रस्तावित पाठ्यक्रम के रागों की विशेषतायें।
- स्वर विस्तार के माध्यम से रागों का विकास और भेद। कठिन अलंकारों की रचना।

इकाई–8– **05 अंक**

- संगीत सम्बन्धी विषय पर निबन्ध।
- भारतीय संगीत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास। मध्यकाल एवं आधुनिक काल।

इकाई–9– **05 अंक**

- गीतों के आलाप, तान, बोलतान सहित लिपिबद्ध करने की क्षमता।
- छोटे स्वर समुदायों के आधार पर रागों को पहचानना और उनकी बढ़त की योग्यता।

इकाई–10– पं0 भातखण्डे, पं0 विष्णुदिगम्बर, पं0 जसराज एवं एम0एस0 सुब्बालक्ष्मी की जीवनियां और भारतीय संगीत में उनका योगदान। **05 अंक**

प्रयोगात्मक (गायन) **50 अंक**

(1) निम्नलिखित रागों का विस्तृत अभ्यास राग वृन्दावनी सारंग, राग केदार, राग जौनपुरी।

प्रत्येक रागों में कम से कम एक द्रुत ख्याल तैयार होना चाहिए। उचित अलाप, तान, मुर्की एवं अन्य लयपूर्ण तालबद्ध विस्तार के साथ उनको गाने की योग्यता विद्यार्थी में अपेक्षित है।

कठिन तालबद्ध रूपों और केवल निरर्थक वेग पर ही नहीं, वरन् सही ध्वनि, उच्चारण, स्पष्टता और गरिमापूर्ण अभिव्यक्ति एवं लय के स्वाभाविक प्रवाह पर बल होना चाहिये।

उक्त रागों के गीतों में कम से कम एक धमार अथवा ध्रुपद, एवं विलम्बित ख्याल व तराना होगा। धमार अथवा ध्रुपद में दुगुन, तिगुन और चौगुन लयकारी होने की क्षमता होनी चाहिए।

(2) राग दुर्गा, राग पूर्वी, राग हमीर इन रागों का सामान्य रूप में अभ्यास। उक्त में अलाप–तान की आवश्यकता नहीं है। केवल स्थायी और अन्तरा पर्याप्त है। प्रत्येक रागों में आरोह, अवरोह और पकड़ गाने की योग्यता होनी चाहिये धीमी गति में अलाप करने पर उन्हें पहचानने की क्षमता विद्यार्थियों में होनी चाहिये।

(3) निम्नलिखित तालों में कम से कम एक गीत सीखना चाहिये।

तीन ताल, झप ताल, दादरा ताल, रूपक ताल, कहरवा ताल।

पाठ्यक्रम में प्रस्तावित सब तालों के ठेके ताल के साथ बोलने, लिखने व हाथ पर लगाने की योग्यता विद्यार्थी में होनी चाहिये तथा तबले पर बजते समय विद्यार्थी को इसकी पहचान करने की क्षमता होनी चाहिए।

(4) पाठ्यक्रम में प्रस्तावित विस्तृत अध्ययन के रागों में छोटे स्वर समुदायों को जब आकार में गाया जाय तब स्वर पहचानने की योग्यता होनी चाहिए। विद्यार्थी में पाठ्यक्रम के सभी तालों का ठेका तबले पर बजाने की योग्यता होनी चाहिये।

विशेष सूचना–अध्यापकों को वाह्य प्रयोगात्मक परीक्षक के विचारार्थ प्रत्येक विद्यार्थी के कार्यों की एक आख्या बनानी चाहिये।

उपचारात्मक शिक्षण हेतु चार यूनिट टेस्ट निम्नलिखित है–

(i) प्रथम यूनिट टेस्ट (MCQ आधारित) जुलाई द्वितीय सप्ताह 20 अंक
(10 अंक ग्रीष्मावकाश गृहकार्य + 10 अंक यूनिट टेस्ट)

(ii) द्वितीय यूनिट टेस्ट (वर्णनात्मक प्रश्न आधारित) अगस्त अन्तिम सप्ताह 20 अंक
(10 अंक वर्णनात्मक + 10 अंक प्रयोगात्मक पर आधारित)

(iii) तृतीय यूनिट टेस्ट (MCQ आधारित) नवम्बर अन्तिम सप्ताह 20 अंक

(iv) चतुर्थ यूनिट टेस्ट (वर्णनात्मक प्रश्न आधारित) दिसम्बर अन्तिम सप्ताह 20 अंक
(10 अंक वर्णनात्मक + 10 अंक प्रयोगात्मक पर आधारित)

नोट– उपरोक्त यूनिट टेस्ट उपचारात्मक शिक्षण के अन्तर्गत विद्यालय स्तर पर लिये जायेंगे। इनके प्राप्तांक परीक्षफल में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे।